वर्तमान में संचालित पाठशाला को कैसे सुचारू एवं सारगर्भित रूप से चलाया जाए

हम सभी को *संस्कार* शब्द का अर्थ पता है,और यह एक ऐसा शब्द है जिसका इस्तेमाल हम हर रोज करते हैं। लेकिन इस शब्द का एक गहरा अर्थ है। यह पुनर्जन्म और कर्म के सिद्धांत को मानता है। संस्कार जीवन का एक अहम हिस्सा है। बच्चों को सही ढंग से विकसित करना एक विज्ञान है। जिस तरह माली पौधों को सिंचता है इसी तरह शिक्षक छात्रों को शिक्षा देते हैं।तकि वे आगे बढ़कर कुछ अच्छा कार्य कर सकें। इसका उद्देश्य बच्चों के मन में आस्था और निष्ठा जगाना है। संस्कार बच्चों को सही पथ पर चलने की प्रेरणा देता है। यही हमारी पाठशाला का उद्देश्य है ।

प्रबल संस्कार से शिक्षा पल्लवित होगी । वर्तमान समय में महसूस किया जा रहा है कि जैसे जैसे शिक्षित नागरिकों का प्रतिशत बढ़ रहा है वैसे-वैसे समाज में जीवन मूल्यों में गिरावट आ रही है । हमें मूल्यों के सौंदर्य का बोध होना चाहिए । विद्यार्थी जो देश का भविष्य है वे तनाव,बाहय आकर्षण और अनुशासनहीनता के शिकार है। इसका कारण पाश्चात्य संस्कृति या समाज ही नहीं, बल्कि संस्कारों के प्रति हमारी उदासीनता है । परिवार बालक की प्रथम पाठशाला है तो माता-पिता प्रथम शिक्षक। पाठशाला में हम यह देख रहे हैं कि जो माता-पिता अपने बच्चों में अच्छे संस्कार आरोपित करते हैं वे बाह्य वातावरण से प्रभावित हुए बिना शिक्षक द्वारा दी गई विद्या को फलीभूत करते हैं । अतः परिवार में प्रत्येक सदस्य का दायित्व है कि बच्चों में भौतिक संसाधनों के साथ पाठशाला के संस्कारों की सौगात दे ।

आज के इस भौतिक युग में धर्म के संस्कार का लोप होता जा रहा है । भौतिक पढ़ाई हेतु कई विद्यालय मौजूद है। उनकी संख्या में प्रतिदिन वृद्धि भी होती जा रही है । बच्चे अच्छी शिक्षा प्राप्त कर जीवन में आगे बढ़ने के अवसर भी पा रहे हैं। पर क्या शांत, निर्मल, स्वच्छ, सुंदर जीवन, तनाव रहित जीवन का ज्ञान पाया?

ऐसे ही सद्ज्ञान सम्यकज्ञान को प्राप्त कराती है *संस्कारशाला*। जीवन जीने की कला सिखाती है संस्कारशाला *हमारी धार्मिक पाठशाला*। जो बच्चे यह शिक्षा प्राप्त करते हैं वह उद्योग हो या व्यापार धर्म, समाज व शिक्षा के क्षेत्र में अभूतपूर्व प्रगति प्राप्त करते हैं। अपने संस्कारों द्वारा परिवार धर्म एवं समाज की गरिमा बढ़ाते हैं । पाठशाला में विद्यार्थियों का आकर्षण आगमन एवं अध्ययन किस प्रकार वृद्धिंगत हो इसका प्रयत्न हम करते हैं। बच्चे धर्म से परिचित हो प्रभावित हो इसी उद्देश्य से हमने पाठशाला में नए उपक्रम शुरू किए है ।

इसमें बच्चों को जैनिज्म की प्रारंभिक शिक्षा दे रहे हैं । जैन धर्म का परिचय,प्रभु पूजा क्यों और कैसे करें, सामायिक का रहस्य, प्रभु भक्ति और गुरु भक्ति पर ध्यान कैसे केंद्रित करें, जैन धर्म का रहस्य क्या है, कर्म फिलोसॉफि, परिवार का महत्व, जैन इतिहास,णमोकार महामंत्र, बालगीत, जैन आचरण और जैन आहार, 24 तीर्थंकरों का परिचय, हमारे पर्व, देवदर्शन, जैन प्रतीक इत्यादि विषय बहुत ही सरलता से हेतु तर्क व दृष्टांत के साथ हम सिखाने का प्रयास करते हैं।

इसके साथ ही धार्मिक गेम, प्रश्नोत्तर मंजूषा, प्रभावना यात्रा, धार्मिक क्षेत्रों की वंदना इत्यादि उपक्रम हम पाठशाला द्वारा लेते हैं ।

अब तो पूरे विश्व में कोरोना नामक माहामारी से सब तरफ लॉक डाउन है। जिन मंदिर के पट भी बंद कर दिए हैं। हमने महावीर भगवान का जन्म कल्याणक भी अपने-अपने घरों में रहकर ही मनाया, और यह जरूरी भी है। पर अब पाठशाला भी बंद है। इसीलिए बच्चे दिन भर मोबाइल और टीवी ना देखें इसलिए हमने सोशल नेटवर्किंग के माध्यम से पाठशाला का ग्रुप बनाकर रोज बच्चों की धार्मिक ऑनलाइन प्रतियोगिता ली। यह हमारा एक प्रयास था कि बच्चों को इस समय धर्म के प्रति रुचि बढे और धार्मिक उपक्रमों से जुड़े रहे। क्योंकि बाल मनोविज्ञान को समझना भी एक बड़ी तपस्या है ।

हमें अपने बचपन की धार्मिक बातें आज भी चमत्कृत करती है। यदि आज के बच्चों से धार्मिक विषय को लेकर चर्चा या बात करें तो वह उसे कैदखाना ही बतलाएंगे। आज के बच्चों को लगता है कि कब बचपन खत्म हो और वे बड़े बन जाए और धार्मिक शिक्षा से पीछा छूटे। बच्चे ऐसा क्यों सोचते हैं? कभी आपने इस विषय पर गंभीरता से विचार नहीं किया, होगा जानते हैं, ऐसा क्यों होता है? हम बच्चों पर अनुशासन लादते जा रहे हैं। बात बात में कहते हैं, तुम्हें यह करना चाहिए, वह

करना चाहिए, यह नहीं करना चाहिए, इस टोका टोकी में बचपना मुरझा जाता है। बच्चे आखिर चाहते क्या है? यह कोई नहीं पूछता दरअसल बच्चों के बाल मन को समझना एक विज्ञान है और दूसरी भाषा में कहा जाए तो यह किसी तपस्या से कम नहीं है ।

वर्तमान में यह पाठशाला ऐसे ही सुचारू रूप से चलती रहे इसलिए हम हमारी पाठशाला में धार्मिक पढ़ाई के साथ-साथ कुछ धार्मिक पाठ्य सहगामी क्रियाओं पर भी ध्यान दे रहे हैं। इससे ही पाठशाला के छात्रों का वर्तमान में चहुमुखी विकास संभव है। धार्मिक पाठ्य सहगामी क्रियाओं की मदद से छात्र जहां अपनी धार्मिक शिक्षा में अच्छा प्रदर्शन करेंगे, वही वर्तमान में अपनी अन्य खूबियों को भी विकसित कर पाएंगे। जो उनके वर्तमान में पेशेवर जीवन के लिए भी कुछ अच्छा करने में मदद करेगा । धार्मिक शिक्षा के साथ-साथ अन्य गतिविधियों जैसे धार्मिक गीत, गायन , वादन, पेंटिंग, सजावट, रंगोली कला और शिल्प, योगा,डिजिटल टेक्नोलॉजी आदि पर भी ध्यान केंद्रित किया जा रहा है ।

वर्तमान में धार्मिक पाठ्य सहगामी क्रियाएं बच्चों के समग्र विकास के लिए आवश्यक है । बच्चों का धार्मिक शिक्षाविदों पर ध्यान केंद्रित करना अच्छी बात है किंतु कहीं ऐसा तो नहीं कि वह अक्सर अत्यधिक दबाव के कारण तनाव में आ जाते हो । अगर ऐसा है तो जरूरी है कि उन्हें तनाव से बाहर निकालने या मनोदशा को बेहतर करने के लिए धार्मिक सह पाठ्यचर्या गतिविधियों में संलग्न किया जाए। दबाव के कारण बच्चे अपने धार्मिक पाठ्यक्रम को रटने में अधिक विश्वास करने लगते हैं इससे उनके बुद्धि कौशल का विकास अधूरा रह जाता है। धार्मिक पाठ्य सहगामी क्रियाओं के माध्यम से वे चीजों का प्रयोग करना सीखते हैं। इसके अंतर्गत विभिन्न चुनौतियों का समाधान करने के लिए वे विश्लेषण,संश्लेषण और मूल्यांकन करते हैं जिससे उनका बौद्धिक विकास होता है।

धार्मिक पाठ्य सहगामी क्रियाओं के अंतर्गत बच्चे सामूहिक कार्यों के मूल्यों को सीखते हैं क्योंकि वह एक साथ मिलकर कार्य करते हैं। इस प्रकार उनमें सामाजिक कौशल का विकास होता है।

हर बच्चे में एक विशेष प्रतिभा निहित होती है, जो विद्यालय हो या धार्मिक उनके माध्यम से बाहर नहीं आ सकती। इसीलिए वर्तमान में उनकी वह छुपी हुई प्रतिभा बाहर आ सकती है। जिससे उनके सपनों के पंखों को सही दिशा प्राप्त होगी।

यदि वर्तमान में पाठशाला को सुचारू रूप से चलाना है तो धार्मिक सह पाठ्यक्रम के माध्यम से चलाएं तो पाठशाला के सभी छात्र इसमें रुचि लेंगे और प्रभावशाली साधर्मी व्यक्तित्व का निर्माण कर पाएंगे । बच्चे इससे वर्तमान मैं समाज और देश के विकास में अपनी भागीदारी देंगे ।

जय जिनेन्द्र🙏

अध्यापिका

शिवानी विशाल संगई

आचार्य श्री 108 विद्यासागर दिगंबर जैन पाठशाला

सेलू, जि परभणी (महाराष्ट्र)